# इतिहास भी रोया था शहीद अजय सिंह की कुर्बानी पर

- डॉ. अवधेश कुमार अवध

जिसकी किलकारियों से गूंजा हो जम्मू, जिसके वैराग से पावन हुआ हो माँ गोदावरी का कूल, जिसकी बहादुरी का साक्षी हो माँ सतलज और जिसके बलिदानों के समक्ष बौना हो गयी हो गगनचुम्बी कुतुबमिनार। उस बंदा बहादुर वैरागी के एकलौते सपूत का नाम था अजय सिंह जिसकी कुर्बानी के जज्बे पर स्तब्ध हो जाता है इतिहास। ... पुनरावृत्ति लगती है गुरु गोबिन्द सिंह के जाबाज नन्हें बेटों की।

सन् 1716 के जून माह में धरती तवे को समान जल रही थी। बंदा वैरागी के सभी साथियों की 9 दिनों में प्रतिदिन 100 की दर से हत्या कर दी गई जिसका गवाह मार्च का रात-दिन समान होना था। वैसे तो दिल्ली ने बहुतेरे अमानुषों को, दुर्दातों को देखा था किंतु इस बार का मंजर सबसे भयावह था। दिल्ली क्रूर मुगलों के अत्याचार से विधवा विलाप करने को विवश थी। धधकती लाल आग में दर्जन भर चिमटे धधकाए जा रहे थे। जल्लाद की भूमिका में दर्जनों खूंखार मुगल अट्टहास कर रहे थे। शायद यम दूत भी रंचमात्र इंसान की तरह होते होंगे लेकिन ये तो बस ।। उस वक्त बंदा वैरागी की वीरता को चुनौती दे रहा था उनका ही नन्हा सा पुत्र। बाप से बढ़कर बेटा। दोनों आमने-सामने। जालिम जल्लाद जलते हुए चिमटों से बंदा वैरागी के माँस नोचते। अंगद पाँव जमातु वीर अजय सिंह अटल रहता। एक जल्लाद दोनों हाथों में गर्म सलाखें लिए अजय के पास आकर फिर वही सवाल दुहराता है, 'इस्लाम कुबूल कर लो। हम दोनों को आजाद कर देंगे।' तब तक उसकी दादी अजय सिंह की यूकों से भींग गई थी। घृणा और स्वाभिमान से थूक ही तो दिया था नन्हें वीर से उस मुगलिया जल्लाद के मुख पर। गुस्से को जब्त करता हुआ वह मुगल बंदा वैरागी से पूछा.' अब तुम कैसे मरना चाहते हो?' बंदा वैरागी की रोबीली आवाज गूंजी, 'अब मैं मौत से नहीं डरता, यह शरीर ही दुःख का कारण है।...' बाप-बेटे की अद्‌वितीय वीरोचित प्रतिस्पर्धा ने कसाइयों की हैवानियत को परास्त कर दिया। लाचार दिल्ली की सल्तनत ने बंदा वैरागी के फौलादी जिस्म को नोच नोचकर माँस विहीन कर दिया था किन्तु न बाप डिगा न बेटा। अन्ततः मुगलों ने इब्राहिम के बलिदान का खेल बंदा के साथ खेला। बाप की गोद में बेटे को लिटा दिया और बाप को छुरी पकड़ाकर बेटे का कत्ल करने का फरमान हुआ। बाप ने फरमान को मानने से इंकार कर दिया। अब जो खेल खेला गया वह किसी भी हैवानियत से भयानक था, अमानवीय था। निर्भीक अजय सिंह को बाप की गोद से घसीटकर हवा में लहरा दिया गया और जालिम तलवार ने उस नन्हें से शिशु के दो फाँक कर दिए। यह बर्बरता यही नहीं रुकी। फिर शहीद बेटे के शव से माँस नोचकर बाप के मुँह में दूँस दिया गया किन्तु वहाँ रोने वाला कोई नहीं था। बंदा तो फिर से वैरागी हो गया था.।।। विदेह हो गया था। भारत माता का अद्‌भुत लाल वीर अजय सिंह गुरु गोबिन्द सिंह के नौ और सात वर्षीय शहीद पुत्र जोरावर सिंह और फतह सिंह की पंक्ति में शामिल हो गया था। इन्हें इतिहास में अमर करने का श्रेय न केवल इनकी बहादुर बल्कि जालिम औरंगजेब को भी जाता है।

27 अक्टूबर, 1670 को राजौरी, जम्मू में श्री रामदेव के घर एक अद्भुत बालक ने जन्म लिया जिसका नाम लक्ष्मन दास रखा गया। 15 वर्ष का लक्ष्मन दास बहुत होनहार था और शिकार खेलने का शौकीन भी। एक दिन उसका तीर एक गर्भवती हिरनी को जा लगा। बच्चा बाहर आया और इहलीला समाप्त। पल भर में सब कुछ इस बालक के सामने घटा। सब कुछ अप्रत्याशित था, असहनीय था। गुरु जानकीनाथ से सलाह लेकर लक्ष्मन दास निकल पड़ा वैराग के पथ पर। पंचवटी (नासिक) से होता हुआ गोदावरी के तट पर सन्यासी बन गया। माधोदास के नाम से ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। यह सच है कि बालपन की विरक्ति प्रायः अटल होती है। स्थापनाएँ मजबूत होती हैं। निर्णय अडिग होते हैं।

गुरु गोबिन्द सिंह एक ऐसे बहादुर का नाम है जिसने न सिर्फ अपने पिता गुरु तेगबहादुर को बल्कि अपने चारों पुत्रों को भी शहादत के पथ पर वक्त के तकाजे पर भेजा। गुरु तेगबहादुर लोगों को संगठित करने के लिए देश के कोने-कोने तक जाते थे। आज के पूर्वोत्तर के असम में भी आए थे। उस समय औरंगजेब की सेना अहोम राजा पर चढ़ाई की थी। सराईघाट आज भी इसका गवाह है। इस युद्ध में अहोम सेनापति महावीर लाचित बरफूकन के शौर्य की गाथा और मुगलों के पराजय की कहानी हर असमिया की जुबान पर है। इस युद्ध में अहोम सेना के साथ परोक्ष रूप से गुरु तेगबहादुर का सहयोग अति महत्त्वपूर्ण है। सिखों के प्रथम गुरु गुरुनानक देव भी असम की धुबड़ी में आए थे। गुरुद्वारे का बुर्ज आज भी गुरु तेगबहादुर की असम यात्रा की याद दिलाता है। पूर्वोत्तर के हर राज्यों में एकाधिक गुरुद्वारों का होना यहाँ सिखों की सकारात्मक भूमिका और लगाव की परिचायक है।

विशालकाय आंततायी मुगल सेना से लोहा लेते हुए बहुतों को खो चुके थे गुरु गोबिन्द सिंह। औरंगजेब उनकी वीरता और युद्ध कौशल का कायल था। सन् 1708 में गोदावरी परिक्षेत्र के नांदेड़ में घूमते हुए गुरु गोबिन्द सिंह को सन्यासी माधोदास के बारे में पता चला और वे चल दिए मिलते। मुलाकात के दौरान गुरु ने माधोदास को दीक्षा देते हुए कहा, 'स्वमुक्ति छोड़कर देशमुक्ति करो। आज से तुम्हारा नाम बंदा बहादुर वैरागी होगा।' इसके साथ ही वर्तमान राजनीति को समझाते हुए गुरु गोबिन्द सिंह ने बंदा को पाँच तीर, एक निशान साहिब, एक नगाड़ा और एक हुक्मनामा देकर कुटिया से विदा किया कर्मभूमि में। नवें गुरु तेगबहादुर का हत्यारा जलालुद्दीन और गुरु गोबिन्द सिंह के दो छोटे बेटों को दीवार में चिनवाने वाला सरहिन्द का नवाब वजीर खान से बदला लेना बंदा वैरागी की प्राथमिकता थी। बंदा वैरागी उसी लक्ष्य पर उन्मुख हुए।

हजारों शिष्यों के साथ बंदा बहादुर का काफिला चला। साधक के हाथों में शस्त्र ने दुश्मनों को गाजर-मूली बनाकर खेत कर दिया। जलालुद्दीन और वजीर खान के साथ वे सब भी मारे गए जो नरभक्षी मुगलों के हिमायती और हिन्दुओं के विश्वासघाती थे। गुरु गोबिन्द का सपना साकार हुआ और लोहगढ़ की स्थापना हुई। सरहिंद पर कब्जा हुआ। खालसा को मूर्त रूप मिला। बहादुर शाह प्रथम और फिर फर्रुखसियार से युद्ध की आँख मिचौली चलती रही। बंदा बहादुर की तूती से औरंगजेब की चूलें हिलने लगीं।

यद्यपि बंदा बहादुर वैरागी का शासनकाल बहुत छोटा था किन्तु उसने गुरुनानक देव और गुरुगोबिन्द के नाम पर सिक्के चलवाए। किसानों और मजदूरों की दशा सुधारने के लिए जमींदारी उन्मूलन का सूत्रपात किया। जन कल्याण इस सन्यास्त्री वीर के भीतर कूट कूटकर भरा था। सन् 1715 में कुपित बादशाह फर्रुखसियार की लाखों की फौज ने इस वीर को किसी भी हाल में पकड़ने का बीड़ा उठाया। एक विश्वासघाती के सहयोग से शाही सेना अब्दुल समद खाँ के नेतृत्व में गुरुदासपुर के गुरुदास नंगल गाँव को घेर ली। महीनों तक चले गोरिल्ला युद्ध के कारण रसद समाप्त हो गया और बंदा वैरागी के सैनिक भूखों मरने लगे। अन्ततः दिसम्बर 1715 को बंदा बहादुर वैरागी को गिरफ्तार होना पड़ा। लोहे के पिंजरे में बंद किया गयाउन्हें। भूखे-प्यासे गर्म सलाखों से बोटियाँ नोचते हुए हाथी पर लादकर शाही सेना पंजाब से दिल्ली की ओर कूच की।

दिल्ली की हार्डिंग लाइब्रेरी की भूमि देख चुकी है सैकड़ों सरदारों की कुर्बानी। 9 जून, 1716 को वीर शहीद अजय सिंह की अद्वितीय कुर्बानी के पश्चात् मुगल हार मान चुके थे धर्मान्तरण कराने में। माँस विहीन बंदा बहादुर वैरागी को हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया गया। जब-जब इतिहास मुगलकाल का पन्ना पलटेगा तब-तब बहादुर बंदा वैरागी के सपूत वीर अजय सिंह को कुतुबमीनार झुककर सलाम ठोकेगी और बंदा बहादुर सेतु गौरवशाली अतीत से वर्तमान को जोड़ेगा।